# 'अन्या से अनन्या' में स्त्री चिंतन के विविध स्वर

**डॉ. अंकिता विश्वकर्मा**

**शोध सार :** प्रभा खेतान द्वारा लिखित 'अन्या से अनन्या' आत्मकथा अपने लेखनीय विशेषताओं और स्त्री चिंतन के विविध स्वर के कारण हिन्दी साहित्य में अपना विशेष स्थान रखता है। इसमें भारतीय मारवाड़ी परिवार की परंपरावादी पितृसत्तात्मक विचारधारा, परिवार तथा समाज से मुठभेड़ करती हुई लड़की के सामान्य स्त्री से विशिष्ट स्त्री बनने के संघर्ष का वर्णन हुआ है। प्रभा खेतान 'दूसरी औरत' के प्रति भारतीय दृष्टिकोण, स्त्री जीवन की विडंबना, भूमंडलीकरण और बाजारवाद के प्रभाव का विवेचन किया है।

नारी को वैचारिक स्वतंत्रता के लिए आर्थिक रूप से आत्म निर्भर होना होगा। विवाहेतर संबंधों में समाज केवल स्त्री को ही दोषी क्यों मानता है, इस पर उन्होंने गंभीर चिंतन किया है। भारत हो या अमेरिका विश्व के प्रत्येक स्थान पर नारी जीवन की समस्याएँ एवं त्रासद यथार्थ एक समान है।

**बीज शब्द:** स्त्री, चिंतन, पितृसत्तात्मक, दूसरी औरत, पीरियड्स, विडंबना, भूमंडलीकरण, संस्कृति, बाजारवाद।

**मूल आलेख -**

हिन्दी साहित्य के आधुनिक काल में आत्मकथा विधा अपना विशिष्ट स्थान रखती है। प्रभा खेतान द्वारा लिखित 'अन्या से अनन्या' आत्मकथा में स्त्री विमर्श के रूप में गहरी संवेदना, ईमानदारी के साथ बेबाक प्रस्तुति एवं स्त्री जीवन के विभिन्न प्रश्नों को अभिव्यक्त करने वाली महत्त्वपूर्ण कृति है। उन्होंने अपनी आत्मकथा में सामान्य स्त्री के विशिष्ट बनने के सफर एवं तत्कालीन भारतीय सामाजिक परिवेश को चित्रित किया है। 'अन्या से अनन्या' आत्मकथा के एक अंश का प्रकाशन तद्भव पत्रिका में हुआ। तत्पश्चात् हंस मासिक पत्रिका में मार्च 2006 से दिसम्बर 2006 तक कुल नौ अंकों में यह आत्मकथा धारावाहिक रूप में प्रकाशित हुई। 2008ई0 में पुस्तक के रूप में इस आत्मकथा का प्रकाशन हुआ।

भारतीय समाज में मारवाड़ी समाज परंपरावादी और रूढ़िवादी माना जाता है, क्योंकि वहाँ पर पितृसत्तात्मक दृष्टिकोण के कारण स्त्रियों को केवल बच्चे पैदा करने और परिवार के भीतर घुटन भरी जिंदगी जीने के लिए बाध्य किया जाता है। प्रभा खेतान की माँ 'पुरनी देवी खेतान' एक सामान्य महिला थी। गृहस्थी के जोड़-तोड़ में लगी रहती थी। अपनी बँधी बँधायी जिंदगी के बोझ तले वे दबी हुयी थी। पति की मृत्यु के बाद उनकी विचारधारा में परिवर्तन हुआ और वे आधुनिक एवं प्रगतिशील से सहमत हो गयी। इसलिए वे चाहती थी कि उनकी बेटियाँ पढ़-लिखकर आर्थिक रूप से स्वावलम्बी बने। उनकी माँ कहा है- "तुम लोग जरूर कमाना, अपने पैरों पर खड़ी होना। आखिर हमें क्या मिला? बस बच्चे पैदा करती रही।"[1] भारतीय समाज में स्त्री जीवन की परिधि उसका पिता, पति और पुत्र ही होता है। प्रभा खेतान के पिता की मृत्यु के बाद उनकी माँ का जीवन बिखर जाता है। उनकी दृष्टि में- "स्त्री होना अम्मा की नजर में पाप है, एक हीन स्थिति है, गुलामों का जत्था है जो बिना मालिक के जी नहीं पाएगा।"[2] यह स्थिति भारत के प्रत्येक स्त्री का है, जो

आर्थिक रूप से आत्मनिर्भर हो या न हो। इसलिए स्त्री को इस गुलामी एवं पराश्रय की स्थिति से मुक्त होना होगा।

प्रभा खेतान अपनी किशोरावस्था की स्मृतियों को लिखते हुए कहती है कि किसी साढ़े दस वर्ष की लड़की के पीरियड्स प्रारम्भ होना पाप के समान है। वे कहती है कि इसमें उस लड़की का क्या दोष है? पीरियड्स के नाम पर आज भी स्त्रियों में मानसिक पीड़ा सहन करना पड़ता है। इक्कीसवीं सदी में सामाजिक परिस्थितियों में परिवर्तन हुआ है किंतु समाज के पिछड़े क्षेत्रों में अभी भी उन्हें अछूत के रूप में देखा जाता है। प्रभा खेतान के पिता की वार्षिकी के दिन ही उन्हें पीरियड्स आया था। ऐसी स्थिति में अम्मा नफरत करती है और उन्हें लोगों के बीच आने के लिए मना किया जाता है। दाई माँ उनसे कहती है- "अरे मोर बिटिया; एतना लोगन के बीच हम कईसे तोहके ले जाईं? बहूजी तो हमके चीरकर रख देइहँ। तनिक धीरज धर बिटिया।"[3] उनका बालमन इस स्थिति को समझने में असमर्थ था कि ये उन्हें क्या हो गया है।

'अन्या से अनन्या' आत्मकथा में प्रभा खेतान ने स्त्री जीवन के त्रासद यथार्थ का वर्णन किया है। आधुनिकता के आवरण में स्त्रियाँ स्वतंत्रता को यौन उच्छृंखलता के रूप में मान लेती है। जिसके प्रति वे अपने जीवन के द्वारूण सच से प्रेरणा लेने के लिए स्त्रियों को समझाना चाहती है। इसलिए वे कहती है- "प्यार व्यार कुछ नहीं, बस देह का जबर्दस्त आकर्षण था उसी का फल मुझे भोगना पड़ रहा है।"[4] प्रभा खेतान एक प्रतिष्ठित कारोबारी थी। इसलिए उन्हें देश-विदेश की यात्रा करनी पड़ती थी। इसी संदर्भ में उन्हें अमेरिका प्रवास करना पड़ा। जहाँ पर उन्होंने स्त्री जीवन के वैश्विक स्थिति को देखा। विश्व के सभी क्षेत्रों में नारी जीवन का त्रासद यथार्थ एक जैसा ही है। वे अमेरिका में मिस्टर डी, मिसेज डी, क्लारा ब्राउन एवं भारत के डॉक्टर सर्राफ, सावित्री और प्रभा खेतान के माध्यम से स्त्री जीवन के त्रिकोणीय स्वरूप को दर्शाया है। आइलिन प्रभा खेतान से कहती है- "तब क्या तुम्हारे देश में भी औरतें त्रिशंकु होकर जी लेती है?" "कहाँ नहीं जीतीं वे? दुनिया में ऐसा कोई कोना बताओं, जहाँ औरत के आँसू नहीं गिरे?"[5] विवाहेतर संबंध के कारण स्त्री-पुरुष दोनों का जीवन वेदना से भर जाता है।

प्रभा खेतान 'दूसरी औरतों' के प्रति भारतीय समाज के दृष्टिकोण को रेखांकित करते हुए कहती है कि समाज में विवाहित स्त्रियों को सती-सावित्री और दूसरी औरत को पथभ्रष्ट और अपवित्र माना जाता है, जबकि पुरुष के ऊपर समाज कभी ऊँगली तक नहीं उठाता है। ऐसा लगता है कि केवल स्त्री ही दूसरी औरत हो, पुरुष का उसमें कोई दोष नहीं। समाज में विवाह की अनिवार्यता को वे स्त्री के पहचान के रूप में देखते हुए कहती है- "यदि विवाह व्यवस्था ही एक शाश्वत सच है और यदि इससे इतर कुछ भी स्वीकृत नहीं तो मुझे भी शादी कर लेनी चाहिए, बिना शादी के मेरी कोई पहचान नहीं बनेगी।"[6] 'दूसरी औरत' होने के बावजूद प्रभा खेतान डॉ0 सर्राफ के परिवार का माँ की भाँति भरण पोषण करती है, बदले में उन्हें केवल स्नेह की आकांक्षा रहती है।

स्त्री जीवन की विडंबना उसका अकेलापन है, जिसका कारण प्रेम का अभाव तथा उपेक्षा का भाव आदि होता है। विवाहित पुरुष के साथ प्रेम बंधन की बात सुनकर दाई माँ प्रभा खेतान को समझाती है कि इस प्रकार के

रिश्तों का कोई भविष्य नहीं होता है- 'करेजवा का इ घाव तो सूखले पर अऊर पीर बढ़हिएँ।"[7] वास्तव में प्रभा खेतान को दूसरी औरत होने का दंश आजीवन सहना पड़ता है।

भूमंडलीकरण के दौर में स्त्री को काम के अवसर प्राप्त हुए है। वह घर की चहारदीवारी पार करके कार्यालय और कारखानों तक पहुँची है। खेल खलिहान संभालने वाली स्त्री भी चाहती है कि उसकी बेटी शिक्षित होकर अपने भविष्य का निर्माण करें। डॉ0 कृष्णा जाखड़ के शब्दों में "अपने हक के लिए लड़ने की यही बुलंद आवाज स्त्री को परम्परा की गहरी खाईयों से बाहर निकाल रही है।..... न सिर्फ सामाजिक और राजनीतिक क्षेत्र में बल्कि साहित्यिक क्षेत्र में भी स्त्री आगे आ रही है।"[8] आज स्त्री आगे बढ़कर अपनी समस्याओं पर बोलने लगी है तथा अपने हक के लिए राष्ट्रीय सरकारों से अपने अधिकारों की माँग कर रही है।

प्रभा खेतान ने 'अन्या से अनन्या' आत्मकथा में अमृता प्रीतम तथा महादेवी वर्मा से भेंट के प्रसंग का उल्लेख किया है। आधुनिक नारी का जीवन कैसा होना चाहिए? इस सन्दर्भ में वे कहती है- "पुरुष ने शिव के अलावा सत्य और सुंदर को चाहा तो स्त्री क्यों नहीं, अपने जीवन में इसकी माँग करें? स्त्री भी न्याय और औचित्य की माँग करेगी। इस नए सर्जित संसार में प्रगति का प्रशस्त मार्ग, घर की देहरी से निकलकर पृथ्वी के अंत छोर तक जाता है।"[9]

भारतीय समाज में ऐसी मान्यता है कि स्त्री का अपना कोई घर नहीं होता? इस ज्वलंत प्रश्न के प्रत्युत्तर में प्रभा खेतान अपने अकेले जीवन के लिए न केवल घर बनाती है, बल्कि उसे सजाती-सँवारती भी है। समाज अकेले स्त्री के घर को शंका की दृष्टि से देखता है, किन्तु उन्हें इसकी कोई परवाह नहीं। वे आज की नारी की महत्वाकांक्षाओं का जीवंत प्रतिरूप है जो अपने जीवन में आने वाली मुसीबतों का डटकर सामना करती है। नारी जीवन से जुड़े प्रश्न पर वे खुलकर कहती है- "यहाँ सिर्फ कुँआरी कन्याओं और पत्नियों की जरूरत है। बाकी कौन बची? विधवाएँ और वृद्धाएँ तो तीरथ में रहती है या बड़े दिन की छुट्टियों में जब कलकत्ता क्रिकेट और पिकनिक से गुलजार रहता है, तो ये औरते मुरारी बापू एवं आशाराम बापू का प्रवचन सुनने जाती है। लेकिन परित्यक्ताएँ, वंचिताएँ, तलाकशुदा स्त्रियों को कहाँ रखा जाए।"[10] समाज में स्त्री के सम्मान की कसौटी उसके पति एवं बच्चे को ही माना जाता है। ऐसा प्रतीत होता है कि स्त्री का अस्तित्व एक व्यक्ति के रूप में न होकर केवल मान-मर्यादा का पोषण करने वाली वस्तु मात्र है।

वैचारिक स्वतंत्रता के लिए स्त्री को आर्थिक रूप से आत्मनिर्भर होना होगा। प्रभा खेतान एक प्रतिष्ठित औद्योगिक हस्ती है फिर भी उन्हें आर्थिक असुरक्षा का भय लगा रहा है, क्योंकि परिवार में स्त्रियाँ स्वयं को ज्यादा सुरक्षित महसूस करती है। वे अपनी इस चिन्ता को व्यक्त करते हुए कहती है- "क्या होगा, यदि पैसे खतम हो जाएँगे? मैं तो किसी से माँग नहीं पाऊँगी..... कह नहीं पाऊँगी, कौन मेरी देखभाल करेगा।"[11] अविवाहित स्त्री की सामाजिक असुरक्षा के डर को उन्होंने अभिव्यक्त किया है।

नारी सुरक्षा की भावना की इच्छा से आजीवन किसी न किसी पुरुष की छाँव चाहती है। पुरुष से प्रेम की चाहत में वे अपना सम्पूर्ण जीवन उनके और परिवार की सेवा सुश्रुषा में व्यतीत कर देती है। यदि नारी अपना थोड़ा सा ध्यान अपने भविष्य निर्माण में लगा दे तो वे विश्व के मानचित्र पर अपनी एक अलग पहचान बना

लेंगी। वे कहती है- "हम औरते प्रेम की जितनी गम्भीरता से लेती है, उतनी ही गम्भीरता से यदि अपना काम लेती तो अच्छा रहता, जितने आँसू डाक्टर साहब के लिए गिरते हैं, उससे बहुत कम पसीना भी यदि बहा सकूँ तो पूरी दुनिया जीत लूँगी।"[12] यह स्त्री जीवन का सच है कि उसे अपनी सामाजिक स्थिति का आभास तो है किन्तु वह आर्थिक पराधीनता से मुक्त होना नहीं चाहती है।

भारत कृषि प्रधान देश है किन्तु यहाँ पर विकास का मॉडल उद्योगों को ही बढ़ावा देता है। समाज में गरीबी-अमीरी के बीच की खाई बढ़ती जा रही है। प्रभा खेतान कहती है कि मारवाड़ी परिवारों को सुख, समृद्धि की इच्छा है किन्तु हमारे देश के बहुत सारे लोग दो जून की रोटी भी नहीं जुटा पा रहे है- "हमारी प्रगति से दाई माँ, खेदरवा, हरिया..... बेचन और न जाने कितने लोग है, उन्हें क्या मिला, वे तो वहीं के वही है।"[13] वर्तमान समय में विश्व के सभी देश विश्व की अर्थव्यवस्था की दौड़ में प्रथम स्थान प्राप्त करना चाहते हैं। इस कारण विश्व में अक्सर दो देश आपस में युद्ध करने लगता है, जिसका मूल कारण हमारी औपनिवेशिक मानसिकता है। सन् 1962 के भारत चीन युद्ध का वर्णन करते हुए वे कहती है- "चीन हमारा दुश्मन नहीं है। हमारा असल दुश्मन है साम्राज्यवाद, उपनिवेशवाद, पूँजीवाद...।[14]

हमारे देश में विभिन्न संस्कृतियों के लोग निवास करते हैं, जो हमारी एकता का सूचक है। किंतु कभी-कभी उत्तर भारत के लोगों के साथ दक्षिण भारत के लोग क्षेत्रीयता को लेकर विभेद करते हैं। यू0पी0, बिहार, मारवाड़ी तथा बंगाली का द्वन्द्व यहाँ की जनता में विद्यमान है। इस पर प्रभा खेतान के पिता कहते हैं- "मारवाड़ी-बंगाली के पचड़े में मत पड़ो, खुद को भारतीय समझो। हम स्वतंत्र भारत के नागरिक हो।"[15] हमारी संस्कृति क्षेत्रीय विभेद को स्वीकार नहीं करती है। बाजारवाद ने स्त्री को जितना प्रभावित किया है उतना किसी और ने नहीं किया। स्त्री के शरीर का पैमाना बाजार तय कर रहा है। प्रभा खेतान अपनी आत्मकथा में कहती है- सदा जवान दिखना है, अतः चेहरे पर झुर्री के निशान से वह असहाय हो जाती है। भोगवादी दुनिया उसे आश्वासन देती है कि वह चिरसुंदरी बनी रहेगी। वर्तमान समय में स्त्री की पहचान उसके काम या व्यक्तित्व से नहीं, बल्कि ब्रांड से होने लगा है। बाजारवाद के प्रभाव से स्त्री उपभोक्तावादी संस्कृति का हिस्सा बन कर रह गयी है। वे कहती है- "दस साल के दौरान एक भी ऐसी स्त्री से परिचय नहीं हुआ जो अपने आप से, अपनी देह से, रूप रंग से संतुष्ट हो। औरत इस हद तक वस्तु हो जाती है कि अपनी ही देह की एक-एक परत को दूसरों की नजर से तौलती रहती है।"[16] बाजार ने स्त्री का वस्तुकरण किया है।

इस प्रकार हम यह कह सकते हैं कि प्रभा खेतान ने अपनी आत्मकथा 'अन्या से अनन्या' में स्त्री चिंतन की दृष्टि से सरल, प्रवाहपूर्ण एवं रोचक शैली में स्त्री जीवन की संघर्ष गाथा को उकेरने का प्रयास किया है। भावनात्मक प्रेम से बहती समाज और परिवार से विद्रोह करती हुयी एक पारंपरिक मारवाड़ी समाज की लड़की को सामान्य स्थिति से विशिष्ट पहचान दिलाने के साथ तत्कालीन भारतीय सामाजिक परिवेश का सारगर्भित विवेचन अपनी आत्मकथा में किया है। यह आत्मकथा प्रभा खेतान को अपनी गलती का एहसास करवाता है, जिससे वे स्त्रियों के लिए प्रेरणा की स्रोत भी बन जाती है।

**सन्दर्भ ग्रन्थ सूची -**

1. खेतान प्रभा, अन्या से अनन्या, राजकमल पेपरबैक्स, नई दिल्ली, छठा संस्करण-2021, पृ0 33
2. वही, पृ0सं0 37
3. वही, पृ0सं0 39
4. वही, पृ0सं0 95
5. वही, पृ0सं0 130
6. वही, पृ0सं0 176
7. वही, पृ0सं0 93
8. जाखड़ डॉ0 कृष्णा, प्रभा खेतान के साहित्य में नारी विमर्श, राजस्थानी ग्रंथाकार, जोधपुर (राजस्थान) तृतीय संशोधित संस्करण-2017, पृ0सं0 80
9. खेतान प्रभा, अन्या से अनन्या, राजकमल पेपरबैक्स, नई दिल्ली, छठा संस्करण-2021, पृ0 258
10. वही, पृ0सं0 250
11. वही, पृ0सं0 223
12. वही, पृ0सं0 15
13. वही, पृ0सं 46
14. वही, पृ0सं0 50
15. वही, पृ0सं0 88
16.खेतान प्रभा, अन्या से अनन्या, राजकमल पेपरबैक्स, नई दिल्ली, छठा संस्करण-2021, पृ0सं0 170

**डॉ. अंकिता विश्वकर्मा**
असि. प्रोफेसर, विभागाध्यक्ष, हिन्दी, पूर्णियाँ कॉलेज पूर्णियाँ बिहार.
ई-मेल- vishwakarmankita16@gmail.com मो.नं.: 8687662080